eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

संत शिरोमणि कबीर के समाज दर्शन की वर्तमान समय में उपादेयता

[1]डा0 नीलम
[1]असि0 प्रोफेसर बी0डी0एम0 म्यू0 कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय शिकोहाबाद जिला फिरोजाबाद।

Received: 17 Dec 2023, Accepted: 15 January 2024, Published online: 01 February 2024

Abstract

भारत ऋषि–मुनियों व संतों की पावन धरा रही है। जिस पुण्यधरा पर समय–समय पर अनेक दिव्य विभूतियां अवतरित होती रही हैं

There is something unique in this soil.

वस्तुतः किसी भी महापुरूष की कीर्ति किसी एक युग तक सीमित नहीं रहती उनका लोकहितकारी चिंतन त्रैकालिक, सार्वभौमिक एवं सार्वदेशिक होता है और युग–युगाान्तर तक समाज का पथ प्रदर्शित करता है। संत शिरोमणि कबीरदास भी हमारे समाज व राष्ट्र के ऐसे ही एक प्रकाश स्तंभ है, जिन्होंने न केवल धर्मक्रांति की अपितु राष्ट्रक्रांति के भी वे प्रेरक बने। उन्होंने भयाक्रांत, आडम्बरों में जकड़ी और धर्म से विमुख जनता को अपनी आध्यात्मिक शक्ति और सांस्कृतिक एकता से संबल प्रदान किया। संत कबीरदास उन महान संतों व महापुरूषों में अग्रणी हैं जिन्होंने देश में प्रचलित अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, विभिन्न प्रकार के आडम्बरों व सभी अमानवीय आचरणों का विरोध किया। वे भारत के महान चिन्तक, समाज सुधारक, क्रांतिकारी धर्मगुरू, देशभक्त व प्रतिभाशाली महाकवि के रूप में विख्यात हैं। संत कबीर के हृदय में आदर्शवाद की उच्चभावना, यथार्थवादी मार्ग अपनाने की सहज प्रवृत्ति, मातृभूमि को नई दिशा देने का अदम्य उत्साह, धार्मिक–सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक दृष्टि से युगानुकूल चिन्तन करने की तीव्र इच्छा तथा भारतीय जनता में गौरवमय अतीत के प्रति निष्ठा जगाने की भावना थी। उन्होंने किसी के विरोध तथा निन्दा की परवाह किये बिना समाज का कायाकल्प करना अपना ध्येय बना लिया था।

बीज शब्द– वसुधैव कुटम्बकम्, अहिंसा, सद्गुण, अंतःशुद्धि, जातिविहीन, समाज, पाखण्ड।

Introduction

भारत के महानतम् संतों में कबीरदास महान् संत, कवि व समाज–सुधारक के रूप में विख्यात हैं। 1398 ई0 में काशी में जन्मे संत कबीरदास ने अपना संपूर्ण जीवन सुधारवाद के लिए समर्पित किया और जन सामान्य के मन व जीवन से अंधकार दूर करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उनका समाज सुधार हेतु किया गया विद्वत्तापूर्ण, दार्शनिक, परोपकारी, सामाजिक, प्रशासनिक और मानवतावादी योगदान जीवन को उपकृत करने वाला है। संत कबीरदास द्वारा समता, समानता और समग्र दुनिया को एक आध्यात्मिक बंधन में एकजुट करने हेतु महत्वपूर्ण कार्य किए गये। उनका सामाजिक दर्शन जाति व्यवस्था की सीमा को पार करने और संपूर्ण मानवता को गले लगाने के लिए बनाया गया। आज लगभग सहस्त्र वर्ष उपरांत भी पूरी दुनिया संत कबीर की विचारधारा की वकालत कर रही है। आज हमारे समाज को विभाजित करने वाली अदृश्य लेकिन अजेय दीवारें

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

खड़ी कर दी गई हैं। धर्म एवं अर्थ के झगड़ों को लेकर लोग एक दूसरे के खिलाफ खड़े हैं। समानता शब्द सिर्फ एक नारा बनकर रह गया है। यही कारण है कि वर्तमान में संत कबीर की विचारधारा का तेज होना समय की मांग है। संत कबीर संपूर्ण जगत को एक ही परिवार मानते थे। वे संसार में सुधार हेतु करुणा, मैत्री तथा तापों से संतप्त मनुष्य को विनम्रता, दया, ज्ञान की औषधि घर–घर वितरित करते रहे–

शीलवन्त सबसे बड़ा, सर्व रतन की खानि।
तीन लोक की संपदा, रही सील में आनि।।(1)

संत कबीर ने वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को प्रोत्साहित कर समाज में एकता व अखण्डता का सशक्त उदाहरण प्रस्तुत किया। समूची दुनियां में वसुधैव कुटुम्बकम् भारतीयता की पहचान स्थापित कर रहा है। वसुधैव कुटुम्बकम् का दर्शन पारस्परिक सद्भाव, गरिमा और जवाबदेही को प्रोत्साहित करता है। इस अवधारणा को अपनाकर हम सभी के लिए एक बेहतर, अधिक समावेशी और सामंजस्यपूर्ण दुनियां बनाने की दिशा में काम कर सकते हैं–

"अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।(2)

जिस सिद्धांत के लिए संत कबीर की प्रासंगिकता विश्व में बढ़ जाती है वह है अहिंसा। संत कबीर ने हिंसा का उपदेश देकर संसार का बड़ा ही उपकार किया। उल्लेखनीय है कि कबीर का अहिंसा का विचार प्राणी मात्र के लिए था। आज विश्व में जहां एक तरफ पशुओं के विरूद्ध हिंसा के नए–नए तरीके खोजे जा रहे हैं, वहीं पशुओं के साथ अच्छा आचरण करने को लेकर पेटा (PETA) जैसी संस्थाएं विश्व में आज भी आंदोलन चला रही हैं। **"सहृदय हृदयदर्शितं पशुघातं"** वाले इस महात्मा तथा महापुरूष ने इस पशु हिंसा के विरूद्ध विद्रोह का झण्डा उठाया और तार स्वरों में इस बात की घोषणा की कि मुझे उन लोगों से सख्त नफरत है जो जीवों को खाते हैं–

बकरी पाती खात है, ताकि काढ़ी खाल।
जो नर बकरी खात है, तिनका कौन हवाल।।(3)

संत कबीर के विचारों का आज के संदर्भ में प्रेरणादायी पक्ष यह भी है कि वे सद्गुणों के विकास पर अत्यधिक बल देते थे। उन्होंने अनुयायियों को जो आचरण संहिता बतायी उसमें कष्टों को सहने की ताकत और अनुशासित जीवन को अत्यधिक महत्व दिया। उन्होंने सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए प्रेम की प्रधानता पर जोर दिया है–

पोथी पढ़–पढ़ जग मुआ पण्डित भया न कोय
ढ़ाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पण्डित होय।।(4)

लोकमंगल की कामना करते हुए कबीर कहते हैं कि यदि इस संसार में किसी से दोस्ती नहीं तो दुश्मनी भी न हो। वे सभी मनुष्यों को एक ही शक्ति से उत्पन्न हुआ मानते हैं। उन्होंने मनुष्यों को संकीर्ण विचारधारा को त्यागकर उच्च आदर्शमय जीवन जीने का उपदेश दिया–

क**बीरा खड़ा बाजार में मांगे सब की खैर।**
ना काहू सों दोस्ती, ना काहू सों बैर।।(5)

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

मानव कल्याण के लिए अन्तःशुद्धि का सिद्धांत भी आज काफी महत्वपूर्ण हो जाता है क्योंकि यह व्यक्ति का नैतिक होने पर बल देता है। आज व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं से अधिक संपदा एकत्र करने के लिए संघर्षशील है वह कहीं न कहीं बड़े वर्ग को प्रभावित कर रही है। हाल ही में रिपोर्ट में पाया गया कि कुल संसाधनों का एक बड़ा भाग कुछ व्यक्तियों के हाथ में केन्द्रित होकर रह गया है। ऐसे में अगर संत कवि के विचार सही से स्थापित हो जाएं तो अर्थव्यवस्था में तनाव की जगह सद्भाव व लोक कल्याण की भावना प्रशस्त होगी। भारतीय संस्कृति के ग्रंथ ईशावास्योपनिषद् में भी त्यागपूर्वक उपभोग की मुक्तकंठ से प्रशंसा की गई है–

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम्।।(6)

संत कबीर ने वर्ण एवं जाति–विहीन समाज की स्थापना करने का प्रयास कर समाज को सुदृढ़ व सुंदर रूप में परिवर्तित करने हेतु भी महत्वपूर्ण कार्य किया। उन्होंने समाज में व्याप्त जाति–पाति व ऊँच–नीच की कड़े शब्दों में निंदा की। वे मनुष्य के ज्ञान व कर्म को महान मानते हुए कहते हैं कि–

जाति न पूछों साधा की पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का पड़ा रहने दो म्यान।।(7)

जाति विभाजन का विरोध करते हुए संत कवि कहते हैं कि जाति–पाति को कोई नहीं पूछता। हम सब एक ही ईश्वर की संतान हैं–

जात–पात पूछे न कोई।
हरि को भजै सो हरि का होई।।(8)

संत कबीर ने देश को दुर्दशा, पाखण्ड और अनाचार से मुक्ति दिलाने के लिए और उसे पुनः गौरवशाली और सदाचारी बनाने हेतु शंखनाद किया। उनका कहना था कि हमें वरीयता अपने देश को देनी चाहिए, इसलिए हम सब वह काम करें जिससे देश का सामाजिक स्तर ऊंचा हो। उन्होंने कहा कि हमारे देश की अधोगति का मुख्य कारण अविद्या है। आज अंधविश्वास, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, पशुबलि, अवतारवाद आदि अनेक रूपों में अविद्या जनमानस में घर कर बैठी है। संत कवि ने इनके निवारण में अपनी पूरी शक्ति लगा दी। मूर्तिपूजा का खण्डन करते हुए वे कहते हैं कि यदि पत्थर की पूजा करने से भगवान मिल जाए तो मैं पहाड़ की पूजा कर लेता, उसकी जगह कोई घर की चक्की को नहीं पूजता जिसमें अनाज को पीसकर सभी लोग अपना पेट भरते हैं–

कबीर पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूं पहार।
घर की चाकी क्यों नाहिं पूजैं पीसि खाय संसार।।(9)

समाज में व्याप्त पाखण्डवाद का विरोध करते हुए उन लोगों पर व्यंग्य करते हैं जो दिन भर तो व्रत करते हैं परंतु रात को जीवहिंसा में लिप्त दिखते हैं–

दिन भर रोजा रहत है, रात हनत दे गाय।
यह तो खून व बन्दगी, कैसे खुशी खुदाय।।(10)

संत कवि ने उन लोगों पर भी व्यंग्य किया है जो माला जपते हैं तथा तिलक लगाते हैं लेकिन मन में व्याप्त मैल व ईर्ष्या को खत्म नहीं करते–

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 07, Special Issue 01, February 2024

माला तिलक लगाई के, भक्ति न आई हाथ।
दाढ़ी मूछ मुराय कै चलै दुनी के साथ।।(11)

सतत् विकास लक्ष्य (SDG – Sustainable Development Goal) या यों कहें कि – गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी की समाप्ति हेतु संत शिरोमणि का यह उपदेश भी प्रासंगिक है कि वे परिश्रम द्वारा समाज में व्याप्त गरीबी को दूर करना चाहते थे। वे सदैव कहते थे कि – परिश्रम में सफलता का आनन्द छिपा है। जो मनुष्य परिश्रम करता है उसका ईश्वर भी साथ देता है–

कबीर उद्यम अवगुण को नहीं, जो करि जाने कोय।
उद्यम में आनंद है, सांई सेती होय।।(12)

संत कबीर के ग्रंथों में मैत्री, करुणा, मुदिता, सर्वजनहितैषिता पदे–पदे दृग्गोचर होती है। वे सदैव दुर्बल व गरीब वर्ग को दुःख न देने की बात करते हुए कल्याणकारी भावना को पुष्ट करते हैं–

दुर्बल को न सताईये, जाकि मोरी हाय।
मुई खाल की सांस लो, लोह भसम हो जाए।।(13)

निष्कर्षतः कबीर अपने समय एवं समाज के कटु आलोचक ही नहीं समाज को लेकर स्वप्न द्रष्टा भी थे। उनके मन में भारतीय समाज का एक प्रारूप था जिस पर वे एक विजन के साथ काम रहे थे। उनका अपने समाज के प्रति दृष्टिकोण वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित था, वो किसी भी प्रकार के बाह्य आडम्बर तथा शोषण के खिलाफ खड़े थे। वस्तुतः वे नवयुग का निर्माण करने वाले भारत की अन्यतम विभूति थे। वस्तुतः संत शिरोमणि कबीर व उनके दर्शन का अभ्युदय तथा उसका विश्वव्यापी प्रचार भारतीय संस्कृति के लिए जीवनदायी सिद्ध हुआ। इस विचारधारा ने भारतीय जीवन में अहिंसा, दया, परोपकार, नैतिकता, सहिष्णुता, विश्वबंधुत्व व मानवकल्याण आदि सांस्कृतिक आदर्शों के साथ ही जाति प्रथा का विरोध कर मानवतावादी धारणाओं का प्रचार किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन 2021
2. शर्मा, विष्णु पंचतंत्र, चौखम्भा विद्याभवन, वाराणसी1968, पृ. 347
3. शुक्ल आचार्य रामचन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन 2021, पृ. 65
4. दास, श्यामसुंदर कबीर ग्रंथावली, इंडियन प्रेस लिमिटेड, प्रयाग, पृ. 39
5. देवरे, डॉ. शिवाजी, कबीरदास सृष्टि और दृष्टि, गरिमा प्रकाशन, कानपुर, पृ. 122
6. गोयन्दका, हरिकृष्णदास, ईशादि नौ उपनिषद्, गीता प्रेस गोरखपुर 2010, पृ. 2
7. तिवारी, पारसनाथ कबीर वाणी संग्रह, राका प्रकाशन, छटा संस्करण, पृ. 1749
8. सुन्दरदास, श्याम, कबीरग्रंथावली, लोकभारती प्रकाशन 2019
9. प्रसाद, माता, कबीरग्रंथावली, साहित्य भवन, इलाहाबाद 1985
10. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र, हिंदी साहित्य का इतिहास, प्रभात प्रकाशन, पृ. 65
11. शर्मा, शिवकुमार, हिंदी साहित्यः युग और प्रवृत्तियां, अशोक प्रका दिल्ली 2022–23, पृ. 14
12. सिंह, जयदेव, कबीर वाणी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी 2019, पृ. 133
13. तिवारी, पारसनाथ, कबीर वाणी संग्रह, राका प्रकाशन 2010